MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 436
Weekly Booklet : 436

Hazrate Sufyan Sauri Ke 87 Irshadat (Hindi)

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

हज़रते सुफ़्यान सौरी के 87 इरशादात

(सफ़्हात : 16)

घर आई दौलत वापस कर दी 02

फ़राइज़ के बाद अफ़ज़ल अमल 04

दुनिया की मिसाल 09

सब से बुरी ख़्वाहिश 11

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ के 87 इरशादात[1]

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला "सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ के 87 इरशादात" पढ़ या सुन ले उस के दिल में दुनिया की मह़ब्बत दूर फ़रमा कर उसे रूह़ानी सुकून नसीब फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सह़ाबिये मुस्त़फ़ा ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के वालिदे गिरामी ह़ज़रते समुरह सुवाई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे आ़लीशान में ह़ाज़िर थे कि एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अल्लाह पाक की बारगाह में सब से अच्छा अ़मल कौन सा है ? तो मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सच बोलना और अमानत अदा करना।" (राविये ह़दीस ह़ज़रते समुरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि) मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइये ! फ़रमाया : "कसरते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अ़मल फ़क्र (यानी ग़ुर्बत) को दूर करता है।" (القول البدیع، ص273 مختصراً)

बह़रे रफ़ए मर्ज़ो ज़ह़मत व रंजो कुल्फ़त ढूंडते फिरते हैं वोह लोग कहां का तावीज़
तुम पढ़ो साह़िबे लौलाक पर कसरत से दुरूद है अ़जब दर्दे निहां और अमां का तावीज़

(दीवाने काफ़ी, स. 24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

1… येह रिसाला अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब "अल्लाह वालों की बातें" से तय्यार किया गया है।

घर आई दौलत वापस कर दी (वाक़िआ)

अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के भाई ह़ज़रते मुबारक बिन सईद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ज़िक्र करते हैं कि एक शख़्स ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के पास दिरहम से भरी एक या दो थैलियां ले कर आया, उस के वालिद आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के दोस्त थे और आप उन के पास बहुत जाया करते थे, आने वाले ने अ़र्ज़ की : अबू अ़ब्दुल्लाह (येह ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की कुन्यत है) ! क्या आप के दिल में मेरे वालिद की त़रफ़ से कोई ना पसन्दीदा बात है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह पाक तुम्हारे वालिद पर रह़म फ़रमाए, वोह तो ऐसे ऐसे थे (यानी आप ने उस के वालिद की तारीफ़ की) उस ने अ़र्ज़ की : अबू अ़ब्दुल्लाह ! मैं चाहता हूं कि आप इन दराहिम को ले लीजिये और अपने घर पर ख़र्च कीजिये। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने उस से वोह दिरहम ले लिये और जब वोह शख़्स उठ कर वहां से निकलने लगा तो आप ने वोह थैली मुझे देते हुए फ़रमाया : मुबारक ! येह उसे दे दो और उस शख़्स से फ़रमाया : ऐ मेरे दोस्त के बेटे ! मैं चाहता हूं कि येह माल तुम ले लो। उस ने अ़र्ज़ की : अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या आप को उस के बारे में कोई शक है ? फ़रमाया : नहीं, लेकिन मैं येह चाहता हूं कि येह तुम ले लो। आप ने उसे कई मरतबा कहा तो वोह उसे ले कर चला गया। जब वोह चला गया तो मैं ख़ुद को रोक न सका और अपने भाई ह़ज़रते सुफ़्यान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से नाराज़ होते हुए अ़र्ज़ की : आप पर अफ़सोस है ! आप का दिल है या पत्थर ? क्या आप को मुझ पर रह़म नहीं आता ? क्या हमारे और अपने बच्चों पर रह़म नहीं आता ? उस के इ़लावा मैं ने उन्हें और भी बहुत कुछ कहा, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : अल्लाह ! ऐ मुबारक ! मत़लब येह कि तुम इस माल को मज़े से खाओ और उस का ह़िसाब मुझ से हो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/6)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह सुफ़्यान बिन सई़द सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले, दुनिया से बे रग़बत और दुनियावी माल के ह़िसाबो किताब से डरने वाले थे, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का शुमार तब्अ़ ताबेई़न में होता है, आप बेहतरीन आ़लिम, मुह़द्दिस, बहुत बड़े इ़बादत गुज़ार और अल्लाह पाक के वली थे।

आप के मक़ामो मरतबे और अ़ज़मत व बुलन्दी को कई उ़लमाए किराम ने उजागर किया और कुतुब में इस का ज़िक्र किया बल्कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इस क़दर बा बरकत बुज़ुर्ग हैं कि जो आप की सोह़बत इख़्तियार करता या आप के वसीले से कोई बात करता तो उ़लमा की नज़र में उस की क़द्र भी अ़ज़ीम हो जाती।

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मुझे ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की मह़ाफ़िल बहुत पसन्द हैं क्यूंकि मैं जब भी उन्हें देखना चाहता तो कभी वरअ़ व तक़्वा की ह़ालत में, कभी नमाज़ पढ़ते हुए और कभी फ़िक़्ही मस्अले में ग़ौर करते हुए देखता। (अल्लाह वालों की बातें, 6/497)

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर ऐसे पुर ह़िक्मत और ईमान अफ़रोज़ अक़्वाल इरशाद फ़रमाए हैं कि अगर मुसलमान उन पर अ़मल करें तो उस से اِنْ شَآءَاللّٰہ उन की दुनिया व आख़िरत संवर सकती है। उन्हीं में से चन्द अक़्वाल कुछ तस्हील के साथ यहां पेश किये जा रहे हैं, अल्लाह पाक की रिज़ा पाने और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से उन अक़्वाल को पढ़ें और निय्यत करें कि उन पर अ़मल भी करेंगे اِن شاءَ اللّٰہُ الکریم।

इ़ल्मे दीन की अहमिय्यत और तरग़ीब के बारे में 14 मदनी फूल

﴾1﴿ ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : इ़ल्म इस लिये ह़ासिल किया जाता है ताकि उस के ज़रीए़ अल्लाह पाक का डर और तक़्वा ह़ासिल हो, इसी वज्ह से इ़ल्म को फ़ज़ीलत दी गई है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/501)

﴾2﴿ इ़ल्म सीखो और उस पर सब्र और बरदाश्त से काम लो और उस के साथ हंसी को मत मिलाओ वरना दिल पत्थर हो जाएंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 6/502)

﴾3﴿ अपने ज़रीए़ इ़ल्म को ज़ीनत बख़्शो इ़ल्म के ज़रीए़ ख़ुद को ज़ीनत मत दो। (अल्लाह वालों की बातें, 6/501) (मत़लब येह कि इ़ल्मे दीन की दौलत ह़ासिल कर के अपने आप से जहालत को दूर करो और फिर उस इ़ल्म को फैलाओ, येह नहीं कि इ़ल्म इस लिये ह़ासिल करो कि लोग आप की तारीफ़ करें या आप को बड़ा आ़लिम कहें।)

﴾4﴿ "इ़ल्म" दीन का त़बीब है और "दिरहम" दीन की बीमारी है, जब त़बीब ही बीमारी को अपनी त़रफ़ खींचेगा तो फिर दूसरे का इ़लाज कैसे करेगा ?

(अल्लाह वालों की बातें, 6/501)

﴾5﴿ इ़ल्म का सब से पहला दर्जा ख़ामोशी, दूसरा तवज्जोह से सुनना और याद करना, तीसरा उस पर अ़मल करना और चौथा उसे फैलाना है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/502)

﴾6﴿ फ़राइज़ के बाद इ़ल्म ह़ासिल करने से अफ़्ज़ल अ़मल और कोई नहीं है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/502)

﴾7﴿ आदमी को चाहिये कि अपनी औलाद को इ़ल्म ह़ासिल करने पर मजबूर करे क्यूंकि उस से इस बारे में पूछा जाएगा। (अल्लाह वालों की बातें, 6/505)

﴾8﴿ ह़दीस शरीफ़ सोने चांदी से ज़ियादा है मगर इसे ह़ासिल नहीं किया जाता। (यानी इसे ह़ासिल करने वाले बहुत कम हैं।) (अल्लाह वालों की बातें, 6/503)

﴾9﴿ इ़ल्मे ह़दीस इ़ज़्ज़त ही इ़ज़्ज़त है, जो इस के ज़रीए दुनिया चाहेगा तो दुनिया मिलेगी और जो आख़िरत चाहेगा तो आख़िरत मिलेगी।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/505)

﴾10﴿ लोगों के लिये ह़दीस से बढ़ कर नफ़ामन्द (यानी फ़ाइदेमन्द) कुछ भी नहीं।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/505)

﴾11﴿ अगर मुझे मालूम हो जाए कि कोई इख़्लासे निय्यत के साथ इ़ल्मे ह़दीस त़लब करना चाहता है तो मैं ज़रूर उस के घर जा कर उसे ह़दीस सुनाऊं।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/506)

﴾12﴿ ह़दीस शरीफ़ सीखने से बढ़ कर अफ़ज़ल अ़मल कोई नहीं बशर्ते कि निय्यत दुरुस्त हो। (अल्लाह वालों की बातें, 6/506)

﴾13﴿ इ़ल्म अ़मल के लिये ही ह़ासिल किया जाता है तो अ़मल की वज्ह से इ़ल्म ह़ासिल करना छोड़ो न इ़ल्म ह़ासिल करने की वज्ह से अ़मल तर्क करो।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/18)

﴾14﴿ (ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बहुत बड़े मुह़द्दिस थे मगर उस के बावुजूद आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाते हैं :) मैं चाहता हूं कि ह़दीस शरीफ़ के मुआ़मले में बराबर बराबर छूट जाऊं (यानी सवाब मिले न पकड़ हो)। (अल्लाह वालों की बातें, 7/78)

इ़बादत के बारे में 3 मदनी फूल

﴾1﴿ जब मैं क़ुरआने पाक पढ़ता हूं तो दिल चाहता है यहीं ठहर जाऊं और उस के इ़लावा किसी चीज़ की त़रफ़ न बढ़ूं। (अल्लाह वालों की बातें, 6/506)

﴾2﴿ तिलावते क़ुरआन में (ज़ियादा) ख़ूबसूरती उस वक़्त आती है जब उस में ज़ोहद (यानी तिलावत करने वाले के दिल में दुनिया से बेरग़बती) भी शामिल हो जाए।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/44)

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन यमान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से सुवाल किया : अबू अ़ब्दुल्लाह ! इ़बादत कहां अच्छी होती है ? आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : जहां रोटियों का बड़ा थैला एक दिरहम का मिलता हो ताकि कोई किसी दूसरे की त़रफ़ सुवालिया नज़रों से न देखे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/26) (मत़लब येह कि इ़बादत उस मक़ाम पर ज़ियादा सुकून से होती है जहां लोगों की बुन्यादी ज़रूरतें आसानी से पूरी हो जाएं जैसे खाने पीने की चीज़ें सस्ती हों, ताकि कोई भूक या मोह़ताजी की वज्ह से दूसरों के सामने सुवाल या उम्मीद भरी नज़र न उठाए।)

ख़ौफ़े ख़ुदा के बारे में 3 मदनी फूल

﴾1﴿ अल्लाह पाक बन्दे पर उस ह़ाजत में ज़रूर इन्आ़म फ़रमाता है जिस में वोह अल्लाह पाक की बारगाह में कसरत से गिड़ागिड़ाता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/17)

﴾2﴿ जब हम दीन में कोई सख़्त वईद या डराने वाली बात सुनते हैं तो डर जाते हैं और जब रह़मत या नर्मी वाली बात सुनते हैं तो मुसलमानों के लिये उस की उम्मीद रखते हैं। हम न फ़ौत होने वालों पर (जन्नती या दोज़ख़ी होने का) फ़ैसला सुनाते हैं और न ज़िन्दों का ह़िसाब करते हैं। जिन बातों का हमें इ़ल्म नहीं होता उन्हें इ़ल्म वालों के ह़वाले कर देते हैं और उन की राय को अपनी राय से बेहतर मानते हैं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/41)

﴾3﴿ जब तक ख़ौफ़े ख़ुदा की शिद्दत न हो इ़बादत पर इस्तिक़ामत पाना मुश्किल है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/501 मुलख़्ख़सन)

हुब्बे माल और दुनिया से बे रग़बती के बारे में 20 मदनी फूल

﴾1﴿ दुनिया को दुनिया इस लिये कहते हैं कि येह "दनिय्या यानी घटिया" है और माल को माल इस लिये कहते हैं कि येह मालदार को टेढ़ा कर देता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/16)

﴾2﴿ माल को माल इस वज्ह से (भी) कहा जाता है कि वोह दिलों को माइल करता है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/531)

﴾3﴿ लोगों की रिज़ामन्दी की ऐसी इन्तिहा है जिस तक नहीं पहुंचा जा सकता और त़लबे दुनिया की भी एक इन्तिहा है मगर उस तक भी रसाई नहीं हो सकती। (अल्लाह वालों की बातें, 6/531) (यानी सब लोगों को ख़ुश रखना मुम्किन नहीं है और ऐसे ही दुनियावी ख़्वाहिशात कभी ख़त्म नहीं होतीं।)

﴾4﴿ बद मज़ा खाना खाना और खुरदरा लिबास पहनना दुनिया से बे रग़बती नहीं बल्कि दुनिया से बे रग़बती तो उम्मीदों का छोटा होना (यानी मौत को पेशे नज़र रखना) है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/531)

﴾5﴿ अगर तुम्हें खाने से सिर्फ़ पेट भरने की ज़रूरत हो तो उस के लिये सुवाल मत करो। अगर तुम्हें नमक की ज़रूरत हो तो सुवाल मत करो और येह जान लो कि जो रोटी तुम ने खानी है नमक मिला कर उस का आटा गूंध दिया गया है और तुम्हें पानी पीने की ज़रूरत हो तो अपने हाथों का इस्तिमाल करो येह पानी के बरतन का काम देंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 6/526)

﴾6﴿ मालदार भी ज़ाहिद (दुनिया से बे रग़बत) हो सकता है जब कि मुसीबत पर सब्र करे और नेमत पर शुक्र करे। (अल्लाह वालों की बातें, 6/532)

﴾7﴿ जब बन्दा दुनिया से बे रग़बत हो जाता है तो अल्लाह पाक उस के दिल में ह़िक्मत भर देता है फिर उस ह़िक्मत को उस की ज़बान पर जारी फ़रमाता है और उसे

दुनिया के ड़यूब, उस की बीमारियां और उन बीमारियों का इ़लाज भी दिखा देता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/535)

《8》 अल्लाह पाक की वोह नेमत जो मुझ से दुनिया को दूर कर दे उस नेमत से बड़ी है जो मुझे अ़त़ा करे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/76) (यानी अल्लाह पाक की सब से बड़ी नेमत येह है कि वोह दुनिया की मह़ब्बत और लालच को मेरे दिल से निकाल दे, येह नेमत उस से भी बड़ी है कि वोह मुझे दुनिया की दौलत अ़त़ा करे।)

《9》 दुनियादारों की ताज़ीम करने वाले आ़लिम में कोई भलाई नहीं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/65)

《10》 मैं किसी की दुनिया से मह़ब्बत को उस के दुनियादारों को सलाम करने से जान लेता हूं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/65)

《11》 मैं ने एक दिरहम भी कभी इ़मारत बनाने में ख़र्च नहीं किया। (अल्लाह वालों की बातें, 7/31) (आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह अ़मल दुनिया से बे रग़बती के आला दर्जे की दलील है।)

《12》 अगर तुम्हें इस बात की इस्तित़ाअ़त है कि अपनी ज़िन्दगी में (बिला ज़रूरत और बिला ह़ाजते शरई़) किसी से मेल जोल न रखो तो ऐसा ही करो, अपने सामाने ज़रूरत की दुरुस्ती की फ़िक्र में लगे रहो, ह़ुक्मरानों के पास जाने से बचो, तुम्हें उन से जो ज़रूरत हो वोह अल्लाह पाक से मांगो, पेश आने वाली हर बात में अल्लाह पाक की पनाह लाज़िम पकड़ो, तमाम लोगों से बे नियाज़ रहो और अपनी ज़रूरतें उसके सामने रखो जिस की बारगाह में ज़रूरतों की कोई ह़ैसिय्यत नहीं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/12)

《13》 साह़िबे बसीरत शख़्स की निगाह में दुनिया का अक्सर ह़िस्सा बदतरीन है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/28)

﴾14﴿ जिस भी शख़्स को दुनिया से कुछ दिया गया उस से येह कहा गया कि "इसे ले और इस के बराबर ग़म भी ले।" (अल्लाह वालों की बातें, 7/29)

﴾15﴿ ज़ोहद इख़्तियार करो अल्लाह पाक दुनिया के राज़ तुम पर ज़ाहिर फ़रमा देगा, परहेज़गारी इख़्तियार करो अल्लाह तुम्हारे हिसाब में नर्मी फ़रमाएगा, मश्कूक काम छोड़ कर वोह काम करो जो तुम्हें शक में न डालें और शक को यक़ीन से ज़ाइल करो इस से तुम्हारा दीन सलामत रहेगा। (अल्लाह वालों की बातें, 7/29)

﴾16﴿ अगर तुम आख़िरत में रग़बत की वज्ह से दुनिया को नहीं छोड़ सकते तो इस अन्देशे से छोड़ दो कि येह बेकार ज़मीन और बीमार ऊंटों का अस्तबल है जिस में तुम जैसे लोगों की कसरत है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/30)

﴾17﴿ जिस नेक अ़मल की वज्ह से तुम फ़ौत शुदा लोगों पर रश्क करते हो, वोही ख़ूबी अगर किसी ज़िन्दा शख़्स में देखो तो उस पर भी रश्क करो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/30 मुलख़्ख़सन) (यानी सिर्फ़ मरने के बाद नेकियों की क़द्र न करो बल्कि जिन्दों मे भी नेकी देख कर उन की क़द्र करो।)

﴾18﴿ जब भी दुनिया से हमारे पास कुछ आया तो हम ने येही चाहा कि उस पर राज़ी कोई शख़्स मिल जाए तो येह उसे दे दें। (अल्लाह वालों की बातें, 7/31)

﴾19﴿ दुनिया की मिसाल शहद लगी रोटी की तरह है, अगर उस पर कोई मख्खी बैठती है तो वोह रोटी उसे परों से महरूम कर देती है और अगर वोह ख़ुश्क रोटी पर बैठे तो महफ़ूज़ रहती है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴾20﴿ तुम्हारे लिये दुनिया में सब से अच्छी चीज़ वोह है जो तुम्हें दुनिया में आज़माइश में न डाले और अगर तुम किसी चीज़ में आज़माइश में मुब्तला हो जाओ तो तुम्हारे लिये बेहतर येही है कि वोह चीज़ तुम्हारे पास से निकल जाए ताकि तुम आज़माइश से बच सको। (अल्लाह वालों की बातें, 7/30 मुलख़्ख़सन)

(यानी अस्ल भलाई इस में है कि दुनियावी चीज़ तुम्हारे लिये फ़ितना या गुनाह का सबब न बने और अगर बन रही है तो उस का न होना ही तुम्हारे हक़ में बेहतर है।)

मौत, क़ब्र और आख़िरत के बारे में 12 मदनी फूल

﴾1﴿ जिस त़रह़ तुम्हें मौत का इ़ल्म है अगर इसी त़रह़ चौपायों को भी होता तो तुम्हें कोई भी मोटा ताज़ा जानवर खाने को न मिलता। (अल्लाह वालों की बातें, 6/538)

﴾2﴿ मैं ने कभी अपने नफ़्स के इ़लाज से ज़ियादा दुश्वार इ़लाज किसी शै का नहीं किया, कभी वोह मेरे ख़िलाफ़ होता है और कभी मुवाफ़िक़।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/8)

﴾3﴿ ऐ होशियार शख़्स ! ज़िन्दगी गदली है इस की सफ़ाई मौत और क़ब्र की हौलनाकी को याद करना है। लोगों ने सोच बिचार के बाद दुनिया को बुरा कहा है जो इन्दराइन के (कड़वे) फल की त़रह़ ऊपर से ख़ूबसूरत और अन्दर से इन्तिहाई कड़वी है। ज़माने के ह़वादिसात हमेशा से इस के साथ जुड़े हुए हैं और इस की मुसीबतें पत्थरों पर बहते तेज़ पानी की त़रह़ हैं। (अल्लाह वालों की बातें, 6/513)

﴾4﴿ जब तू दुनिया से तक़्वे का तोशा ले कर नहीं जाएगा और मौत के बाद ऐसे शख़्स से मिलेगा जिस ने तक़्वा को अपना तोशा बनाया था तो तुझे शर्मिन्दगी होगी कि तू उस के जैसा क्यूं न हुवा और तू ने वैसी तय्यारी क्यूं न की जैसी उस ने की।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/514)

﴾5﴿ जब मुर्दा चारपाई पर होता है तो उस से कहा जाता है : लोगों से अपनी तारीफ़ सुनो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴾6﴿ जब किसी मरे हुए शख़्स का तज़्किरा हो तो (उस के बारे में) आ़म लोगों की बातों को अहमिय्यत न दो बल्कि इ़ल्मो अ़क़्ल वाले लोगों की बातों को अहमिय्यत दो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/38)

﴾7﴿ मरने वाले के घर वालों को चाहिये कि वोह मरने वाले को कलिमए शहादत की तल्क़ीन[1] करें क्यूंकि ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام जब उस की कमर को छूते हैं तो उस की बोलने और पहचानने की सलाह़िय्यत ख़त्म हो जाती है, फिर वोह जान कनी की तक्लीफ़ का जाम पीता है, अगर उस वक़्त उस के हाथ में तल्वार हो तो क़ुदरत पाने पर बाप को भी क़त्ल कर दे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/71)

﴾8﴿ लोग सो रहे हैं जब मरेंगे तो बेदार हो जाएंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/72)

﴾9﴿ आंखों का देखना दुनिया से और दिल का देखना आख़िरत से है। बेशक बन्दा आंखों से देखता है तो उस से कोई फ़ाइदा ह़ासिल नहीं कर पाता और अगर वोह दिल से देखता है तो फ़ाइदा ह़ासिल करता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴾10﴿ सब से बुरी ख़्वाहिश येह है कि तुम आख़िरत वाले अ़मल से दुनिया त़लब करो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴾11﴿ मैं दुनिया से आख़िरत की त़रफ़ कूच करने वाले मोमिन की मिसाल उस बच्चे से देता हूं जो रेह़मे मादर (यानी मां के पेट) की घुटन से निकल कर दुनिया की राह़त पाता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/32)

﴾12﴿ ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येह शेर मिसाल के त़ौर पर पेश फ़रमाया करते थे :

1... जान कनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आए फ़ौत होने वाले को तल्क़ीन करें यानी उस के पास बुलन्द आवाज़ से पढ़े : اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه (صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم) मगर उसे पढ़ने का हुक्म न करें। (जौहरए नय्यिरा, स. 130)
नीज़ जब उस ने कलिमा पढ़ लिया तो तल्क़ीन रोक दें, हां अगर कलिमा पढ़ने के बाद उस ने कोई बात की तो फिर तल्क़ीन करें कि उस का आख़िरी कलाम "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" हो। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि जिस का आख़िरी कलाम "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" हो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।
(ابوداود، 3/255، حدیث:3116۔ عالمگیری، 1/157)

بَاعُوْا جَدِيْدًا جَمِيْلًا بَاقِيًا اَبَدًا بِدَارِسٍ خَلَقٍ يَا بِئْسَ مَا اتَّجَرُوْا

तर्जमा : उन्हों ने नई ख़ूबसूरत और हमेशा बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को पुरानी और मिटने वाली (दुनिया) के बदले बेच दिया, उन की तिजारत कितनी बुरी है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/9)

शोहरत से बचने के बारे में 7 मदनी फूल

﴾1﴿ मैं मक्का व मदीना में ग़रीब, बे सहारा और इबादत गुज़ार लोगों के दरमियान रह कर दिली सुकून पाता हूं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/10)

﴾2﴿ शोहरत से बचो, मैं जिस बुज़ुर्ग के भी पास गया उन्हों ने मुझे शोहरत से रोका, जान पहचान कम रखो तुम्हारी ग़ीबत कम होगी। पोशीदा रहने में आफ़ियत है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/33)

﴾3﴿ किसी को भी दोस्त बना लो फिर उसे नाराज़ कर दो और फिर किसी को उस के पास भेज कर अपने बारे में उस की राय मालूम कर के देख लो (कि वोह तुम्हारी कैसी मुख़ालफ़त करता है)। (अल्लाह वालों की बातें, 7/13)

﴾4﴿ जो तुम से वाक़िफ़ न हो उसे अपने बारे में न बताना और जो तुम्हें जानता हो उस के बारे में जानने की कोशिश न करना। (अल्लाह वालों की बातें, 7/13)

﴾5﴿ जाहो मन्ज़िलत की महब्बत से बचना क्यूंकि इस से मुंह मोड़ना दुनिया से मुंह मोड़ने से भी ज़ियादा मुश्किल है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/531)

﴾6﴿ मैं चाहता हूं मैं ऐसी जगह होऊं जहां पहचाना जाऊं न रुस्वा किया जाऊं। (अल्लाह वालों की बातें, 6/534)

﴾7﴿ मैं ने किसी भी शै को छोड़ना ओहदा व सरबराही छोड़ने से ज़ियादा आसान देखा है। तुम देखोगे कि कोई शख़्स खाना, पानी, माल और कपड़े तो छोड़ सकता है

मगर जब उस से ओहदा व सरबराही के मुआमले में झगड़ा किया जाए तो वोह उस का दिफ़ाअ करेगा और दुश्मनी पर उतर आएगा। (अल्लाह वालों की बातें, 7/56)

मुतफ़र्रिक़ बातों के बारे में 28 मदनी फूल

﴾1﴿ शरीर लोगों से ख़ैर की उम्मीद रखना तअज्जुब की बात है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/72)

﴾2﴿ जब तुम्हें अपने नफ़्स की पहचान हो जाएगी तो फिर तुम्हें अपने बारे में की जाने वाली बातें कोई नुक़्सान नहीं देंगी। (अल्लाह वालों की बातें, 6/535)

﴾3﴿ ज़ालिम का चेहरा देखना भी ख़ता है और गुमराह गर पेशवाओं को देखना पड़े तो उन्हें दिल में बुरा जानो वरना कहीं तुम्हारे आमाल बर्बाद न हो जाएं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/57)

﴾4﴿ अमीरों के घरों को न देखो और जब वोह सुवारियों पर कहीं से गुज़रें तो उन्हें भी मत देखो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/57)

﴾5﴿ जिस ने ज़ालिम के लिये लम्बी उम्र की दुआ की उस ने पसन्द किया कि अल्लाह पाक की नाफ़रमानी की जाए। (अल्लाह वालों की बातें, 7/65)

﴾6﴿ अज्र सब्र के बराबर मिलता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/75)

﴾7﴿ वोह शख़्स आलिम व समझदार नहीं जो आफ़त व आज़माइश को नेमत और आसूदगी को मुसीबत न समझे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/76)

﴾8﴿ हम ने दीनो दुनिया में हम ख़याल दोस्त से ज़ियादा नफ़ा बख़्श कोई शै नहीं पाई। (अल्लाह वालों की बातें, 7/78)

﴾9﴿ अल्लाह पाक की हम्द ज़िक्र भी है और शुक्र भी, इस के इलावा किसी चीज़ में एक साथ ज़िक्र और शुक्र नहीं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/78)

﴾10﴿ लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में (हालात में ख़राबी के पेशे नज़र) किसी समझदार की आंख ठन्डी न होगी। (अल्लाह वालों की बातें, 7/17)

﴾11﴿ तुम्हें चाहिये कि ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के लिये दरमियानी राह इख़्तियार करो और सरकश लोगों की मुशाबहत इख़्तियार करने से बचो, खाने, पीने लिबास और सुवारी से वोह चीज़ें इख़्तियार करो जो घटिया न हों नीज़ मुत्तक़ी, अमानतदार और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों से मश्वरा लिया करो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/19)

﴾12﴿ दोनों मुहाफ़िज फ़िरिश्ते नेकियों और बुराइयों की बू उस वक़्त पाते हैं जब दिल पुख़्ता इरादा कर लेता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/22)

﴾13﴿ जब सूरज मग़ारिब से तुलूअ़ होगा तो मलाइका अपने सहीफ़े लपेट लेंगे और क़लम रख देंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/23)

﴾14﴿ शैतान की कमर तोड़ने के लिये لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहने से ज़ियादा बड़ी कोई चीज़ नहीं और सवाब में इज़ाफ़ा करने वाले कलामों में اَلْحَمْدُ لِلّٰه जैसा कोई कलाम नहीं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/23)

﴾15﴿ गुमान दो त़रह़ का है, एक वोह जिस में गुनाह है। दूसरा वोह जिस में गुनाह नहीं। गुनाह वाला येह है कि ज़बान पर आ जाए और ज़बान पर न आए उस में गुनाह नहीं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/23)

﴾16﴿ अगर यक़ीन दिल में ऐसा क़रार पकड़ ले जैसा होना चाहिये तो दिल जन्नत के शौक़ की वज्ह से ख़ुश हो जाएगा या जहन्नम के ख़ौफ़ से ग़मगीन।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/26)

﴾17﴿ जब तुम्हें किसी सस्ते अ़लाक़े का इ़ल्म हो तो वहां चले जाओ क्यूंकि वोह तुम्हारे दीन के लिये ज़ियादा सलामती वाला और तुम्हारे लिये तोहमत को ज़ियादा कम करने वाला है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/26)

﴾18﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से मरवी है कि हम ईद के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के हमराह निकले, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : आज के दिन हमारा पहला काम निगाहें झुकाना है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/32)

﴾19﴿ ख़्वाहिशात, झगड़े और ह़ाकिम से दूर रहना। (अल्लाह वालों की बातें, 7/41)

﴾20﴿ जिस का बात़िन उस के ज़ाहिर से अच्छा हो तो येह फ़ज़्ल है और जिस का बात़िन उस के ज़ाहिर से बुरा हो तो येह ज़ल्म है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/44)

﴾21﴿ क़ौल, अ़मल के साथ ही दुरुस्त है और क़ौल व अ़मल दोनों निय्यत के साथ ही दुरुस्त हैं और क़ौल, अ़मल और निय्यत सुन्नत की मुवाफ़क़त के साथ ही दुरुस्त होते हैं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/47)

﴾22﴿ जब अल्लाह पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे क़ौल व फ़ेल की दुरुस्ती अ़त़ा फ़रमाता है और उसे गुनाहों से म़हफ़ूज़ रखता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/49)

﴾23﴿ जिस ने किसी बद मज़हब की बात तवज्जोह से सुनी और उसे उस का बद मज़हब होना मालूम था तो वोह अल्लाह पाक की अमान से निकल कर नफ़्स के सिपुर्द कर दिया गया। (अल्लाह वालों की बातें, 7/49)

﴾24﴿ शिकम सैरी (यानी पेट भरने) से बचो कि येह दिल सख़्त करती है, ग़ुस्सा पी जाया करो और ज़ियादा न हंसो कि येह दिलों को मुर्दा करता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/52)

﴾25﴿ अपने घर वालों के साथ अच्छी त़रह़ रहो और ऐसे हो जाओ कि तुम्हारी ह़ालत से मौत की याद आ जाए। (अल्लाह वालों की बातें, 7/72)

﴾26﴿ "لَا تَتَكَلَّمْ بِلِسَانِكَ مَا تَكْسِرُ بِهِ اَسْنَانَكَ" यानी अपनी ज़बान से ऐसी बात न निकालो जो तुम्हारे दांत तुड़वा दे। (अल्लाह वालों की बातें, 6/536)

﴾27﴿ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन यूनुस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को बे शुमार मरतबा येह दुआ़ मांगते सुना कि "ऐ अल्लाह ! हमें सलामत रख, हमें सलामत रख, ऐ अल्लाह ! इस दुनिया से हमें सलामती के साथ जन्नत तक ले जा, ऐ अल्लाह हमें दुनिया व आख़िरत में आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमा।" (अल्लाह वालों की बातें, 6/538)

﴾28﴿ रह़मते इलाही की उम्मीद रखने वाला फ़ासिक़ उस इ़बादत गुज़ार से अल्लाह पाक के ज़ियादा क़रीब है जो इन्आ़माते बारी तआ़ला के ह़ुसूल का ज़रीआ़ सिर्फ़ अपने अ़मल को समझता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/55)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मकतबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025